परिवर्तन

एक डरावना परिवर्तन

हँसता है मुझपर

वह हरे रंग को धीरे-धीरे काला करता है

और नमी को शुष्कता में बड़ी शिष्टता से बदल देता

हाथों में थमा देता है धीरे से अशांत झुनझुने

मेरे बच्चों को

जिनकी कहानियाँ की परीयाँ डर से दुबकी हैं

बारूद से बनाना सिखता है खिलौने

इस तरह

वह हमारी सभ्यता और संस्कारों की नसों में

भर देता है बाजार और व्यापार

बड़ी अजीब बात

कि हम ऑक्सीजन की तरह इसे अपनी साँसों में पी लेते हैं

और हमारी चेतना को

तनिक भी भनक नहीं लगती.....

.....प्रतिभा चौहान